ALL RIGHTS RESERVED
सर्वाधिकार सुरक्षित

2021

हिन्दी भाषा और साहित्य

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 300

अनुदेश :

- उपांत के अंक पूर्णांक के द्योतक हैं।
- प्रश्न-पत्र **दो** खण्डों में विभाजित है।
- प्रत्येक खण्ड से **तीन** प्रश्नों को चुनते हुए कुल **छः** प्रश्नों के उत्तर दें।
- परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
- एक ही प्रश्न के विभिन्न भागों के उत्तर अनिवार्य रूप से एक साथ ही लिखे जाएँ तथा उनके बीच में अन्य प्रश्नों के उत्तर न लिखे जाएँ।

खण्ड—क

1. मध्यकालीन साहित्यिक भाषा के रूप में अवधी भाषा के विकास पर विचार करते हुए अवधी भाषा में रचित भक्तिकाव्य का अनुशीलन कीजिए। 50

2. मानक हिन्दी के प्रमुख व्याकरणिक लक्षणों की विवेचना कीजिए। 50

3. स्वतंत्रता के बाद भारत संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी के विकास के विविध पक्षों का विश्लेषण कीजिए। 50

4. हिन्दी सूफी काव्यधारा की प्रवृत्तियों एवं उपलब्धियों की व्याख्या कीजिए। 50

(Turn Over)

5. छायावाद और रहस्यवाद का अंतर स्पष्ट करते हुए छायावाद के काव्य वैशिष्ट्य का निरूपण कीजिए। 50

6. हिन्दी उपन्यास के विकास की रूपरेखा स्पष्ट कीजिए। 50

खण्ड—ख

7. कबीर की प्रासंगिकता की युक्तियुक्त मीमांसा कीजिए। 50

8. "सूर की राधा हिन्दी साहित्य की अनुपम सृष्टि है।" स्पष्ट कीजिए। 50

9. सिद्ध कीजिए कि तुलसीदास भारतीय संस्कृति के सच्चे आराधक और गायक रचनाकार हैं। 50

10. "'गोदान' में प्रेमचंद का समग्र जीवन-अनुभव अपनी विशदता के साथ अभिव्यंजित हुआ है।" सोदाहरण प्रकाश डालिए। 50

11. "आचार्य शुक्ल के निबंध विषय प्रधान हैं या व्यक्ति प्रधान।" इस कथन की युक्तियुक्त विवेचना कीजिए। 50

12. प्रस्तुत अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या करते हुए रचनाकार के भाषा-प्रयोग-कौशल एवं संबद्ध अवतरण के प्रतीयमान अर्थ पर प्रकाश डालिए : 25×2=50

(क) जयघोष तुम्हारे चारण होंगे; हत्या, रक्तपात और अग्निकाण्ड के लिए उपकरण जुटाने में मुझे आनंद नहीं। विजय-तृष्णा का अंत पराभव में होता है। अलक्षेन्द्र! राजसत्ता सुव्यवस्था से बढ़े तो बढ़ सकती है, केवल विजयों से नहीं। इसलिए अपनी प्रजा के कल्याण में लगो।

(ख) वह रहस्यमय व्यक्ति
अब तक न पायी गयी मेरी अभिव्यक्ति है,
पूर्ण अवस्था वह
निज-सम्भावनाओं, निहित प्रभावों, प्रतिभाओं की,
मेरे परिपूर्ण का आविर्भाव,
हृदय में रिस रहे ज्ञान का तनाव वह,
आत्मा की प्रतिमा।

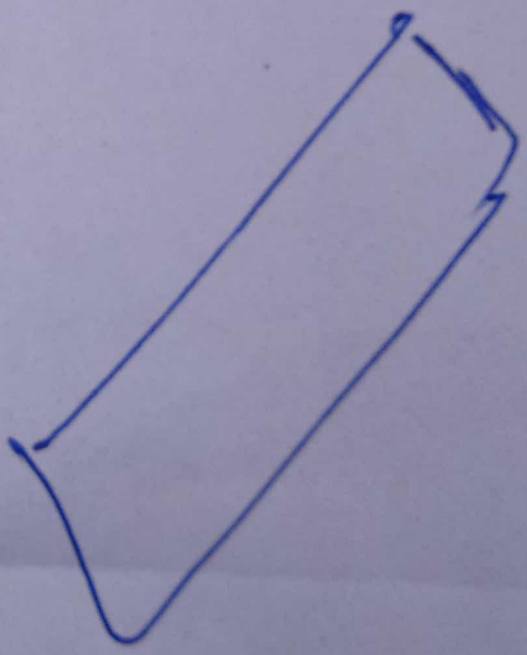

★ ★ ★

রাহুল নাথ

রাজনাথ।